वैक्सींस हैं, उनको लेकर थोड़ा हमें रिसर्च-बैक्ड फ्रेमवर्क बनाना पड़ेगा कि 50 साल से कम लोगों को जो सडेन हार्ट अटैक हो रहे हैं, उसको हम कैसे काबू में ला सकते हैं। वैसे ही, 'लांसेट' की स्टडी बताती है कि इंडिया में 5 से 6 लाख इंडियंस की अचानक हार्ट अटैक होने से मृत्यु हो जाती है और वे 50 साल से कम उम्र के हैं। यह सिर्फ उनके परिवार के लिए ही दु:ख का विषय नहीं है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी दु:ख का विषय है। इसलिए मेरी आपसे एक डेटाबेस बनाने की रिक्वेस्ट है। रोज अखबारों में यह आता है कि किसी की डांडिया खेलते-खेलते डेथ हो जाती है, जबकि उसकी कोई हार्ट कंडीशन नहीं थी। कोई heart condition नहीं है, हार्ट को लेकर उनकी कोई हैल्थ हिस्ट्री नहीं है, पर अचानक से उनकी डेथ हो जाती है। डा. प्रशांत नंदा जी ने कल ही इस मुद्दे को रखा था, उन्होंने बताया था कि ट्रेन में एक 38 साल के युवा को हार्ट अटैक आ जाता है। वहां कोई medical facilities नहीं थीं। इस पर भी खास तौर पर ध्यान देना चाहिए।

दूसरा, मैं यह कहना चाहूंगी कि अमेरिका में काफी लोगों को फाइज़र की वैक्सीन लगाई गई थी। अब, जब उन पर दबाव पड़ा है, तब उन्होंने बताया है कि उसके क्या-क्या साइड इफैक्ट्स हैं। शायद इस पर भी आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है कि जो वैक्सीन्स लगाई गई हैं, कोविड का जो गम्भीर स्वरूप देखा गया, मिनिस्ट्री ऑफ हैल्थ एंड फैमिली वैलफेयर की तरफ से आने वाली जो medicines prescribe की गईं, क्या उनमें कहीं कमी रह गई। हमारे पास साकेत गोखले जी बैठे हैं, 34 साल की उम्र में without any health issues उनको हार्ट अटैक आ जाता है। उनके डॉक्टर्स बताते हैं, यह post-Covid complications हैं। आपके माध्यम से मैं यही रिक्वेस्ट करूंगी कि यह एक महत्वपूर्ण विषय है, इस पर खासकर ध्यान देना चाहिए। मिनिस्ट्री ऑफ हैल्थ एंड फैमिली वैलफेयर ने इसकी गाइडलाइंस दी हैं, पर वे इतनी पुख्ता नहीं हैं कि इस इश्यु को address कर पाएं। मैं आपकी आभारी हूं कि आपने मुझे इस मुद्दे को रखने का मौका दिया Thank you so much, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the Zero Hour mention raised by Shrimati Priyanka Chaturvedi: Dr. Sasmit Patra (Odisha), Shrimati Sulata Deo (Odisha), Shrimati Vandana Chavan (Maharashtra), Dr. Amar Patnaik (Odisha), Shri Derek O'Brien (West Bengal), Shri Sujeet Kumar (Odisha), Shrimati Phulo Devi Netam (Chhattisgarh), Dr. John Brittas (Kerala), Shri Ajit Kumar Bhuyan (Assam), Shri Niranjan Bishi (Odisha), Shri Abir Ranjan Biswas (West Bengal), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra) and Dr. Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu).

Demand to ensure availability of medicines at Jan Aushadhi Kendras

श्री राम नाथ ठाकुर (बिहार) : माननीय उपसभापति महोदय, वर्ष 2015 में बहुत ज़ोर-शोर से यह प्रचार किया गया और कहा गया कि जन औषधि केंद्रों की स्थापना की जाएगी। वहां गरीब और वंचित लोगों के लिए सस्ती दरों पर दवा उपलब्ध होगी, लेकिन हमने देखा है कि बीपी और मधुमेह की जो दवा है, जो 100 रुपये में मिलनी चाहिए, वह 3,000 रुपये में मिल रही है। मेरा आपके

माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि जितने जन औषधि केंद्र खुले हैं, वहां सस्ती दर पर गरीबों को दवाएं वितरित करनी चाहिए और वहां दवाएं उपलब्ध भी होनी चाहिए। वहां दवाएं उपलब्ध नहीं हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वहां से एलोपैथिक दवाएं, अंग्रेजी दवाएं बिकती हैं और बिक रही हैं। सस्ती दर पर जेनेरिक दवा उपलब्ध कराई जाए। आपके माध्यम से मेरा सरकार से यही अनुरोध है, धन्यवाद।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the Zero Hour mention raised by Shri Ram Nath Thakur: Dr. Sasmit Patra (Odisha), Dr. Amar Patnaik (Odisha), Shri Sujeet Kumar (Odisha) and Dr. John Brittas (Kerala).

Concern over adulteration in food items

श्री विजय पाल सिंह तोमर (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति महोदय, आज शुद्ध खाद्य पदार्थ मिलने मुश्किल हो गए हैं। 25 परसेंट से लेकर 80 परसेंट तक adulteration हो रहा है। दूध, सब्ज़ियां, खाने-पीने की चीज़ें, हर चीज़ में adulteration है। मान्यवर, दूध में अरारोट, सपरेटा पाउडर मिलाना और नकली मावा बनाना आम बात हो गई है। उबले आलू, शकरकंद और सपरेटा का खोया बनाया जाता है। मसालों सहित आटा, अनाज, दवाइयां सभी में मिलावट है। घी के नाम पर वनस्पति, मक्खन में मिलावट, आटे में सेलखड़ी, पिसी हुई पाउडर, हल्दी में पीली मिट्टी, काली मिर्च में पपीते के बीज, कटी हुई सुपारी, छुआरे की गुठलियां मिलाना आम बात हो गई है। इनमें इतनी मिलावट हो गई है कि इससे व्यापक बीमारियां फैल रही हैं। सिंथेटिक दूध आता है, मिलावटी दूध मिलता है, बच्चों में ऐसा दूध पीने की वजह से बचपन से ही तरह-तरह की बीमारियां हो रही हैं, जो डॉक्टर्स को भी पता नहीं चल पा रही हैं। मैं अपने क्षेत्र के एक गांव में गया, वहां 40 से अधिक लोग मर गए, डॉक्टर्स सही दवा नहीं दे पाते हैं, क्योंकि उनको पता ही नहीं चल पाता है कि बीमारी ने भयंकर रूप ले लिया है। मान्यवर, मिलावट करने वालों को ऐसी सख्त सज़ा मिलनी चाहिए, जिससे आगे इस तरह के कार्य न हों।

(MR. CHAIRMAN *in the Chair*.)

मान्यवर, मैं एक और बात कहना चाहता हूं कि मिलावट करने वाले नम्बर दो से पैसा कमा लेते हैं, अगर वे पैसे वाले हैं, तो समाज में भी वे सम्मान पा जाते हैं और बड़े पैमाने पर हर जगह जिस भी ब्रांड की चीज़ चाहिए, वह उपलब्ध हो जाती है। किसी भी ब्रांड का घी हो, किसी भी ब्रांड का दूध हो और किसी भी ब्रांड की कोई भी चीज़ हो, वे सब उपलब्ध हो जाती हैं। मान्यवर, जो PFA ACT, 1954 बना हुआ है, वह जहरीले एवं हानिकारक खाद्य पदार्थों से जनता की रक्षा करता है। ...(**समय की घंटी**)... महोदय, मैं इतना कहना चाहता हूं कि इसमें संशोधन की आवश्यकता है। इसके लिए कड़े कानून बनने चाहिए, ताकि उनको सख्त से सख्त सज़ा मिल सके।